तमसो मा ज्योतिर्गमय

SHRI CHITRAPUR MATH, SHIRALI

North Kanara 581 354

ॐ

Recitation of the following Shlokas will be mandatory before and after any Chitrapur Math function/meeting as per instructions from H.H. Shrimat Sadyojat Shankarashram Swamiji. There is however no bar on reciting any additional shlokas.

a) Before the meeting :

दक्षिणास्य समारंभा शंकराचार्य मध्यमा ।
अस्मदाचार्य पर्यन्ता स्मर्या गुरुपरंपरा ॥
शंकरं शंकराचार्यम् केशवं बादरायणम् ।
सूत्रभाष्यकृतौ वंदे भगवन्तौ पुनः पुनः ॥

परिज्ञानाश्रम श्रीगुरुशंकर परिज्ञानाश्रम शंकर सद्गुरु ।
केशव वामन कृष्ण पांडुरंग आनंद परिज्ञानगुरु ।
सद्योजात शंकर सद्गुरु ॥

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः ।
गुरुस्साक्षात् परं ब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः ॥

ॐ सह नाववतु । सह नौ भुनक्तु । सह वीर्यं करवावहै ।
तेजस्विनावधीतमस्तु मा विद्विषावहै ॥
॥ ॐ शांतिः शांतिः शांतिः ॥

b) After the meeting :

ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात् पूर्णमुदच्यते । पूर्णस्य पूर्णमादाय
पूर्णमेवावशिष्यते ॥
॥ ॐ शांतिः शांतिः शांतिः ॥

तमसो मा ज्योतिर्गमय

तमसो मा ज्योतिर्गमय

श्रीमत् आनंदाश्रम स्वामीजी
हांगेले 'कॅनरा सारस्वत' मासिक
पत्रिकेक आयिले दीपावलि संदेश

2002

प्रथम आवृत्ती : संदेश संचिका
प्रकाशन : कॅनरा सारस्वत असोसिअेशन, मुंबई, १९६४
द्वितीय आवृत्ती : तमसो मा ज्योतिर्गमय, २००२
प्रकाशन : श्री चित्रापूर मठ, शिराली

अक्षरजुळणी : गोकर्ण एण्टरप्राइझेस, मुंबई ४०० ०१६
मुद्रक : उबसन्स प्रिंटर्स
प्रकाशक : गुरुदत्त विठ्ठल भट, मानद चिटणीस, स्थायी समिती
श्री चित्रापूर मठ, शिराली ५८१ ३५४

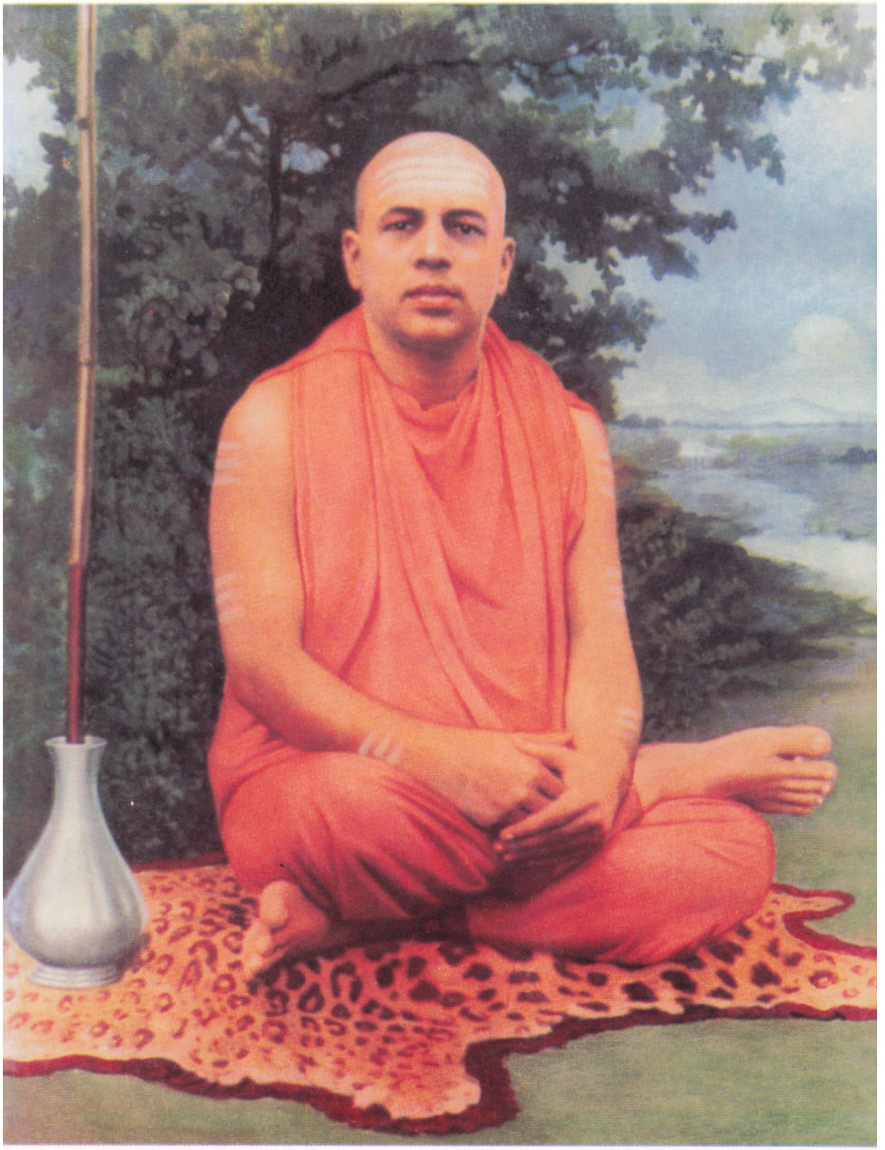

Swami Sadyojat Shankarashram

ॐ

॥ श्री भवानीशंकरो विजयते ॥

SHRI CHITRAPUR MATH
SHIRALI (U.K. DIST.)
581 354, KARNATAKA
INDIA
✆ : (08385) 58368

Our revered Param Poojya Anandashram Swamiji would unravel the most sublime spiritual truths for us in his characteristic simple and sweet manner.

In the joyous and charged atmosphere of Deepavali when one and all celebrated by decorating their houses with rows of lamps and invoked the Goddess of wealth and prosperity His Gracious participation and blessings would reach us through His message published in the Deepavali issue of the KSA magazine. Since H.H. always urged us to walk the path of true Dharma, gave clarity to our perception of God's splendour and assured us final fulfilment in His own Swaroopa much beyond the realm of death, we offer our prayers at His feet with the famous mantra from the Brihadaranyaka Upanishad.

असतो मा सद्गमय

तमसो मा ज्योतिर्गमय

मृत्योर्मा अमृतं गमय ।

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ।

This small but precious collection of H.H.'s message gives sadhakas enough food for thought to bring fresh vitality to their Sadhana.

इत्याशिषः

सद्योजातशङ्कराश्रमः

About this book

This is the Birth Centenary Year of P. P. Shrimat Anandashram Swamiji. As Shantamurti, His advent into the Haridas family was on 29 June 1902. He was the fourth child of Shri Haridas Ramachandra and his wife, Janakidevi.

After 51 Years of Bliss as our Paramaguru, His Holiness attained Mahasamadhi on 16 September 1966 at Bangalore.

During this Year of Grace, we have planned a few commemorative programmes including publications. This book in your hands is the first in the series.

It is a reprint, courtesy Kanara Saraswat Association, of their *Sandesha Sanchika* brought out in 1964. It enshrines the Deepavali Messages bestowed by Revered Swamiji to *Kanara Saraswat* from 1932 to 1964. We have added the Message for 1965 too, and have given the title TAMASO MAA JYOTIRGAMAYA to the book.

Each of the Messages has a timeless quality about it. May we all cherish this book as a precious reminder of our Paramaguru! May we all light up our lives by taking to heart the message vouchsafed by His Holiness year after year!

This book is being released at the Holy Hands of P. P. Shrimat Sadyojat Shankarashram Swamiji. May it adorn every Bhanap home. With this fervent prayer, we

are offering it to the Lotus Feet of P. P. Shrimat Anandashram Swamiji, with Sashtang Pranams.

4 January 2002

Devidas S. Nadkarni
Publications Sub-Committee

PUBLICATIONS SUB-COMMITTE

Devidas S. Nadkarni, Convenor
Gurudatt V. Bhat
V. Rajgopal Bhat
Com. Shrirang N. Bijur
Gurunath S. Gokarn
Vasant P. Hattiangadi
Dr. Prakash S. Mavinkurve

नूतन संवत्सर संदेश - १९३२

इस मार्च मासमें हमारे नूतन संवत्सरका प्रारंभ हो जाता है। इस शुभ समयपर 'कॅनरा सारस्वत' की सम्पादक समिति हमसे कुछ सन्देश चाहती है। उस मासिकके गताङ्कमें छपे हुये निवेदनसे ज्ञात होता है कि-समाजमें धार्मिक, सामाजिक, औद्योगिक वगैरह विषयोके ज्ञानका फैलाव करना भी उसकी नीतिमें अन्तर्गत है। इसीसे हमें तृप्ति है। फिर इसके अतिरिक्त हम और क्या सन्देश दे सकते है? अतः पूर्वोक्त सम्पादक समिति 'तस्मात्सर्वेषु कालेषु मामनुस्मर' इस भगवद्वचनके अनुसार परमात्माको सदा स्मृतिपथमें रखकर इस मासिक पत्ररूपी ज्ञानप्रचारका कार्य बडे उत्साहसे चलावे, और भगवानकी कृपासे जनतासे उत्तम आश्रय पाकर उससे द्विगुणीत उसकी सेवा करनेमें सफलता पावे, यही हमारी परमात्मासे निरन्तर प्रार्थना है।

ॐ तत्सत्

दीपावली संदेश १९३३

'कॅनरा सारस्वत' के दीपावली अंकके लिये कोई संदेश भेजनेकी हमसे प्रार्थना की गयी है, लेकिन बहुत कुछ सोचने पर भी हमें कोई नया संदेश नहीं सूझता। अतः हम इस मंगलमय दीपावलीके समय पर वही हमारा पुराना संदेश दे देते हैं कि 'मतोंकी विविधता रहने पर भी हमारी जनता समाजके कल्याणकी कामनासे परस्पर प्रीतिका और सहानुभूतिका बर्ताव करें'।

सभी समाजका मतैक्य होना तात्विक दृष्टिसे जितना इष्ट है उतना व्यवहारीक दृष्टिसे संभवनीय नहीं देख पडता। इस लिये हमारे हाथमें रहनेवाला समाजोन्नतिका यही एक उत्तम साधन है कि विभिन्न अभिप्रायोके रह जानेपर भी हम प्रेमका व्यवहार करें। ऐसा व्यवहार उनका असंभव भी नहीं है।

अतः परमात्मासे हमारी यह नम्र प्रार्थना है कि हमारी जनतामें परस्पर सहिष्णुता, सौहार्द और प्रेमके भाव जागृत हो, तथा उनसे समाजका कल्याण हो।

ॐ तत्सत्

दीपावली संदेश १९३४

यह 'कॅनरा सारस्वत' का दीपावली का विशेषाङ्क निकल रहा है। संपादक समितिकी सूचनासे हमें इसमें दो शब्द लिखने पडे है।

हमारा समाज सरस्वतीकी आराधनामें जितना तत्पर रहता है, उतना उसी पराशक्तिके और दो रुपोंकी अर्थात् शक्ति और लक्ष्मीकी आराधनामें तत्पर नहीं रहता। यह बात उसके 'सारस्वत' नामको भूषण बनी रहनेपर भी उसकी सर्वाङ्गपरिपूर्ण उन्नतिकी दृष्टिसे एक न्यूनता ही मालूम होती है। इस न्यूनताकी परिणतिके रुपमें अब समाजमें कितनेही निराश्रय दीन आदमी नजर आते हैं।

इस हालतमें 'कॅनरा सारस्वत' संयम, मितव्यय, सात्विक आहार-विहार, तथा उद्योग व्यवसाय इत्यादि विषयोंकी ओर अच्छे लेखोके द्वारा समाजका ध्यान आकृष्ट कर पूर्वोक्त न्यूनताको दूर करनेमें बहुत सहायता दे रहा है, यह बडी हर्षकी बात है। वह आगे भी अपनी इस नीतिको ऐसे ही जारी रक्खे।

इस विषयमें हमारा समाज अच्छी तरह जागृत हो जाय, और अबकी न्यूनताको हटाकर सदा सुख-समृद्धिसे विराजता रहे, यही इस शुभसमयपर परमात्माको स्मरण करके समाजके प्रति हमारी मङ्गलकामना है।

ॐ तत्सत्

दीपावली संदेश १९३५

यह 'कॅनरा सारस्वत' का दीपावलीका विशेषांक निकल रहा है। इसके लिये संपादक समितिकी तरफसे सूचना आनेसे शुभ संदेशके रुपमें दो शब्द लिखे जाते है।

इस नैमित्तिक दीपावली उत्सवको मनानेके साथही इससे जो शिक्षा मिल सकती है उसको नित्यप्रति आचरणमें लानेसे हमारा अधिक कल्याण होगा। काम, क्रोध और लोभ इनको भगवान् नरकका द्वार अर्थात् साधन कहते हैं। साधनमें साध्यका आरोप भी किया जाता है। अतः पूर्वोक्त विकारोंको यदि हम नरक कहेंगे तो वह अनुचित न होगा। इन नरकरुपी असुरोंको हमारे हृदयसे हटाकर उसको परस्पर सहानुभूति, सहिष्णुता, सौहार्द और प्रेम इत्यादि सद्गुणरुपी दीपकोंसे प्रकाशित करना यही हमारी समझमें इस उत्सवसे मिलनेवाली शिक्षा हैं।

प्रत्येक व्यक्ति इस शिक्षाको कृतिमें लानेकी कोशिश करे और इससे समाजकी अभिवृद्धि हो यही परमात्माके चरणोंमें इस शुभ समयपर हमारी प्रार्थना है।

ॐ तत्सत्

कॅनरा सारस्वत संघका रजतोत्सव इस दीपावलीके शुभ समय पर ही आ जाना बहुत आनंदकी बात है । यह संघ अपने विविध कार्यकलापोंसे समाजकी व्यक्तियोंमें परस्पर भ्रातृभाव, सौहार्द वगैरह भावोंको बढाकर संघटनके द्वारा सामाजिक उन्नति साधनेमें सदा तत्पर रहता है, और इसके प्रयत्नोंके फल स्वरुपमें समाजमें विविध विषयोंका ज्ञान फैलानेवाला इसका मुखपत्र 'कॅनरा सारस्वत' तथा अनेक उपयुक्त विषयोंसे भरी हुई 'डिरेक्टरी' हमारे सामने हैं । हम इस समाजोपयोगी संघका उत्कर्ष हृदयसे चाहते हैं ।

अयं हि सर्वकल्पानां सध्रीचीनो मतो मम ।
मद्भावः सर्वभूतेषु मनोवाक्कायवृत्तिभिः ॥

श्रीकृष्णभगवान् उद्धवजीसे कहते हैं-मन, वाक् और शरीर इनके व्यापारोंसे सर्व प्राणियोंमें ईश्वर बुद्धि रखना यही मेरे मतसे भक्तिके सब साधनोंमें उत्तम साधन है । इस वचनके अनुसार समाजसेवा भी जिस सर्वांतर्यामी परमात्माकी सेवा बनती है उसीकी कृपासे इस संघका उत्कर्ष और उससे समाजका अभ्युदय होनेमें हमें लेशमात्र भी संदेह नही है ।

अन्ततः इस दीपावलीके समय पर समाजके लिये श्रीभगवानसे व्यासदेवकी उक्तिमें हमारी यही प्रार्थना है कि,

सर्वे च सुखिनः सन्तु सर्वे सन्तु निरामयाः ।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिदुःखभाग् भवेत् ॥

ॐ तत्सत्

दीपावली संदेश १९३७

दीपावलीका उत्सव आ रहा है । पिछले सालोंकी तरह इस साल भी 'कॅनरा सारस्वत' का विशेषाङ्क निकलनेवाला है । हम भी संदेशके लिये संपादक समितिकी सूचनासे नहीं बच सके । अच्छा, क्या संदेश भेजें? किसी संदेशको भेजना तो जरूर है ।

इस उत्सवके समय हरएक आदमी थोडे कालके लिये ही क्यों न हो, अपने सांसारिक कष्टोंको भूलकर आनन्दमें समय बितानेका प्रयत्न करता है । तथा वैमनस्य आदि असद्भावोंको हृदयसे हटाकर प्रेमसे अपने संबन्धी-बान्धवों और इष्ट-मित्रोंको बुलाकर उनके आदर-अतिथ्यसे परस्पर सौहार्द बढानेमें भी तत्पर रहता है । हृदयकी परिशुद्धि और समाजमें संघटनके लिये यह सब बहुत अच्छा है । पर जब इसी समय समाजके निराश्रित और पीडित व्यक्तियोंकी याद होती है तब इस आनन्द को खुले दिलसे नहीं पा सकते । मनमें थोडासा असमाधानका अंश रह जाता है । अतः ऐसे व्यक्तियोके लिये भी कुछ कार्य करनेकी जरुरत है । आजकल विवाह आदि संस्कारोंमें भी सादापन लानेका आन्दोलन हो रहा है । ऐसी हालतमें अगर हम लोगोंको दीपावलीमें भी सादापनसें काम लेकर बचे हुए धनको एस.वि.सि. बँकके डिस्ट्रेस रिलीफ फंड जैसे निराश्रित-सहायक निधियोंको दान करनेकी सूचना दें तो वह असामयिक न होगी । इससे इष्ट-मित्रोंके सत्कारमें त्रुटि होनेकी संभावना नहीं है, क्यों कि ऐसे अवसरोंमें प्रेमकी प्रधानता रहती है, न अधिक धनको खर्च करनेकी । यदि हम पवित्र हृदयसे और प्रेमसे अर्पण किये

हुये फुल-पत्तोंसे परमात्माकी आराधना कर सकते हैं तो प्रियजनोंके बारेमें भी इसी न्यायको लगा सकते हैं।

परमात्माकी कृपासे लोगोंके हृदयमें दया और परोपकारके सद्भाव अधिकतासे जागृत हों, और उनके द्वारा समाजके दुःखोंका भार हलका हो जाय, यही उस दयानिधिके चरणोंमे हमारी प्रार्थना है।

ॐ तत्सत्

दीपावली संदेश १९३८

दीपावली आ रही है । इस उत्सवके समयमें सब कोई अपने अपने प्रापंचिक कष्टोंको भूलकर इष्ट मित्रोके साथ आनन्दसे समय बितानेमें तत्पर रहते हैं । क्लेशबहुल संसारमें गिरे हुअे लोगोंकी मानसिक शांतिके लिये और समाजमें परस्पर सौमनस्य, प्रेम इत्यादि गुणोंकी वृद्धिके लिये यह सब बहुत अच्छा है ।

पर ऐसे दो दिनोके आनन्दसे ही तृप्त रहनेमें कोई विशेष प्रयोजन नहीं है । जो सच्चा और शाश्वत आनन्द है उसकी प्राप्तिके लिये प्रयत्न करना चाहिये । वैसा आनन्द तो केवल सच्चिदानन्दमय परमात्मा है । जीव भी उसी परमात्मासे निकला है और अपने निजानन्दको भूलकर अनेक दुःखोंको पा रहा है । अतः फिर उस परमात्माको जाकर मिलनेके सिवा नित्यानन्दका दूसरा कोई साधन नहीं है । यही मानवका मुख्य कर्तव्य है । इस कर्तव्यकी याद करनाभी इन उत्सवोंका एक उद्देश है ।

परमप्राप्तिके उपाय बतलाते हुए श्रीभगवान् कहते हैं-

मत्कर्मकृन्मत्परमो मद्भक्तः सङ्गवर्जितः ।
निर्वैरः सर्वभूतेषु यः स मामेति पाण्डव ॥

(गीता, ११,१५)

'हे पाण्डव, प्रपंचमें आसक्तिरहित, सब भूतोंसे वैर न करनेवाला, मेरे लिये कर्म करनेवाला, मुझको ही परम गति माननेवाला जो कोई मेरा भजन अर्थात् ध्यान वगैरह करता है वह मुझको आकर मिलता है ।'

अतः ऐसे साधनोंसे परमात्माको प्राप्त करके आनन्दमय बननेमें सबको प्रवृत्ति हो जाय यही इस शुभ समयमें दीनवत्सल परमात्मासे हमारी प्रार्थना है ।

ॐ तत्सत्

दीपावली तो हो चुकी। लेकिन उस समय होनेवाले 'ॲसोसिएशन'के उत्सवोके साथ हमारा संदेश भी पीछे पड गया है। किसी त्यौहार मनानेका यही उद्देश है कि उसके निमित्तसे हम दिलमें कुछ अच्छे संस्कारों को जगाकर चिरस्थायी बनावें। अर्थात् त्यौहार हो जानेपर भी उसका प्रयोजन रह ही जाता है। अतः पीछेसे भी संदेश भेजना हमने अनुचित न समझा।

हमें इस समय कोई नया संदेश नही सूझता। अतः हम पाठकोंको श्रीकृष्ण भगवानके एक वचनकी याद देकर ही इस मामूली कार्यसे छुटकारा पाना चाहते है।

वह वचन यही है—

मत्कर्मकृन्मत्परमो मद्भक्तः सङ्गवर्जितः।
निर्वैरः सर्वभूतेषु यः स मामेति पाण्डव॥

(गीता, ११, ५५)

ईश्वरार्पण बुद्धिसे कर्म करने लगनेसे हम अच्छा कर्म ही कर पाते है। हम परमात्मपरायण तभी हो सकते हैं जब परमात्माको ही हमारा परम ध्येय समझकर उसके लिये प्रपंचकी सारी वस्तुओंको भी त्यागने को हम तैयार होते हैं। ऐसी तत्परता दृढ बनानेके लिये परमात्माका भजन करना जरूर है। इसी तत्परतासे परमात्माके सिवा अन्य इष्ट-मित्र, बंधु-बांधव या भोग्य विषयोंमें रहनेवाली आसक्ति भी क्षीण हो जाती है। और जब संपूर्ण चराचर विश्वमें व्याप्त होकर रहनेवाला परमात्मा हमारा परम ध्येय

बन जाता है तब निखिल प्राणियों की केवल मित्र-भावके बिना दूसरी भावना हमारे दिलमें कैसी आ सकती है? अंततः परमात्माको पाकर कृतार्थ होना ही इस तत्परताका स्वाभाविक परिणाम है।

दीपावली की भौतिक रोशनी जो अब केवल स्मृतिरूपसे हमारे दिलमें रही है, हम सभीको उस चैतन्यमय स्वयंप्रकाश परमात्माकी याद देकर उसकी प्राप्तिकी ओर हमारी प्रवृत्ति बना दे यही उस दयासिंधु भगवानके चरणकमलोंमें हमारी प्रार्थना है।

ॐ तत्सत्

दीपावली संदेश १९४०

महासमरका धूमधडाका कहते कहते भारतवर्ष के नजदीक आ रहा है। इससे कितने ही लोग निरुद्योग वगैरह आनुषंगिक परिणामोंकी संभावनासे चिंताकुल हो रहे हैं। कितने ही युवक विद्याभ्यास आदिके लिये परदेश जाकर यहाँ लौट आनेकी सुविधाएँ न होनेसे वहीं फँस गये है और इधर उनके बांधवगण उनकी चिंतामें दिन काट रहे हैं। एक ओर विषमज्वर आदि सांक्रामिक रोगोंने बहुत जीवोंका बलि लेकर उनके संबंधियोंमें दुःखकी गाढ छटा फैलायी है। उधर बंबईमें अभी जो आँधी आई थी उसनेभी लोगोंका थोडाबहुत नुकसान हुआ होगा। इन मानुष और भौतिक उत्पातों के बीचमें अबकी दीपावली आ रही है। इस मानसिक अस्वस्थताके समय दीपावली जैसा संतोषका त्यौहार कैसे मनाया जा सकेगा इसी आशंका से हमारा दिल व्यग्र होकर संदेश भेजनेमें अधिकाधिक निरुत्साह बन ही रहा था, इतने ही में संदेश के लिये 'कॅनरा सारस्वत' के संपादकने बिजलीके संदेशसे पुनः याद दी। इससे हमारे चित्तमें जो विचार बिजली के वेगसे जाग उठे, उन्हीं को संदेश के रूपमें उतनीही जल्दीसे-भाषा-शुद्धि या शैली की ओर ध्यान देनेकी फुरसद है कहां?- लिख देते हैं।

इस प्रपंचका स्वरूप ही द्वंदात्मक है। इसमें सुखके साथ दुःख, प्रियके साथ अप्रिय और हर्षके साथ शोक रहा ही करता है। जो लोग हमारी दृष्टीमें बहुत सुखी देख पडते हैं उनका भी मन किसी न किसी चिंतासे व्यग्र हुआ ही करता हैं। जो बहुत दुःखी कष्टी दिखाई देते हैं उनके चित्तमें भी बहुत सात्त्विक समाधान की झलक रहा करती हैं।

कितने ही कवियोंके हृदयसे बडे दुःखाघातोंके समयही अच्छे अच्छे मनोहारी काव्य निकले हैं। हम गीताजी की शैलीमें ऐसा भी कह सकते हैं कि -

हर्षे विषादं यः पश्येद्विषादे हर्षमेव च।
स बुद्धिमान्मनुष्येषु स युक्तः कृत्स्नहर्षभुक् ॥

अतः यदि हम दीपावलीके लिये दुःखरहित कालकी प्रतीक्षा करेंगे तो कल्पांत तक भी हमें वह मौका न मिलेगा। ये त्यौहार हमें यही सिखलाते है कि प्रतिकूल परिस्थिति में भी हम संतोषवृत्तिकी साधना करें। संतोषवृत्ति बाह्य परिस्थितिसे उतना संबंध नहीं रखती जितना कि हमारी मनोरचना से। इस बारेमें हम अँग्रेज लोगोंका उदाहरण ले सकते हैं। इस युद्ध की उत्पातमय परिस्थिति में भी वे लोग–बच्चों से लेकर बुढोंतक सभी स्त्री-पुरुष–कैसी उल्लसित वृत्तिसे अपने दैनंदिन कार्य चला रहा हैं। हमारा पुराना वेदांतशास्त्र भी यही कह रहा है कि जब हम इन प्रापंचिक सुखदुःखों से परे होकर निस्सीम सुखसागर परमात्मामें स्थित होनेकी चेष्टा करेंगे तभी हमें निरुपम शांति मिलनेकी संभावना है।

अतः ऐसी साधनाके सहायभूत इस दीपावली को हम अच्छी तरह से मनावें और हम भी सुखी बनकर दूसरों को भी सुखी बनानें की यथासाध्य कोशिशि करें तथा सर्वांतर्यामी परमात्माकी इस सेवासे धन्य हो जावें।

परमात्मा करे और लोगोंके हृदयमें ऐसी भावनाएं जागृत हों।

ॐ तत्सत्

दीपावलि संदेश १९४१

दीपावळि आयली. ह्या वेळारी भायर दीव्यां प्रकाशु कर्तनाचि भित्तरी हृदयांतुयि प्रकाशु कोरुक प्रयत्न कोर्कांति. हृदयांतुं आशिल्लो क्रोधु, द्वेषु वगैरे विकार दूर कोर्नु तांगेलो जागो परमात्मागेली भक्ति, परस्पर प्रेम इत्यादि सद्भावांक दिंव्का. ह्या रीतिनें चिरस्थायि जाव्नु आश्शिले शुभ संस्कार संपादन केल्यारि अस्लि परब आचरण केल्लें सार्थक जाता.

ह्या संदर्भारि समाजांतुं आस्का जालल्या संघटना विषयांतु दोन शब्द सांग्येद म्हुणु दिस्ता. संघटन म्हळ्ळें कि येकळाक आपणागेलो अभिप्रायुचि बाकीचांनि मान्य कोर्का अश्शि कोणाकयि दिस्चो संभवु आस्स. जाल्यारि हें शक्य ना. ऐकमत्य विंगड आनि ऐक्य विंगड. ऐकमत्य साध्य नातिल्या संदर्भांतुयि ऐक्य साध्य आस्स. येक्कचि कुटुंबांतु भिन्न भिन्न अभिप्रायाच्यो व्यक्ति आस्तांति. जाल्यारी एक कुटुंब म्हळ्ळल्या प्रबल भावनेंमितिं थंयि अभिप्रायभेदु ऐक्याक भंगु कोरुक समर्थ जायना. तशीचि भिन्न भिन्न मतं आश्शिलतरि एक समाजु ह्या भावनेनें परस्पर प्रेम, सहकारु वगैरे कोरूक प्रयत्न केल्यारि संघटन साध्य जात्ता.

आमगेलो इष्टदेवु भवानीशंकरु. तागेल्या दिक्काक नजर दिल्यारि आम्कां ह्या विषयांतु उत्तम बोधु मेळ्ता. गणपतीगेलें वाहन उंदुरु. ईश्वरागेले भूषण सर्पु, षण्मुखागेलो म्होरू, ईश्वरागेलो नंदि, पार्वतीगेलो सिंहु. हे सक्ड स्वभावतः परस्परविरोधि आश्शिलतरि एक परिवार जाव्नु आस्सति. समाजाविषयांतु विचारू केल्यारि हांगा स्वाभाविक विरोधाचि

खब्बरीचि ना, आस्ल्यारि फक्त मतभेदु, जाल्लल्मितिं हांगा ऐक्य-संघटन-आस्स कोर्चे सुतरां शक्य जाव्नु आस्स.

तेन्मितिं ह्या दीपावळि वेळारी समाजाच्या व्यक्तिनिं बंधु-बांधव, इष्ट-मित्र हांच्या सांगाति येकडे मेळ्ळल्या समयारि हृदयांतु वैमनस्य वगैरे दोष आस्ल्यारि ते दूर कोर्नु तांगेलो जागो प्रेम, आदरु इत्यादि गुणांक दीव्नु समाजाच्या उन्नतिक अवश्य आश्शिलें संघटन आस्स कोरुक प्रयत्न कोर्काति होचि ह्या प्रसंगांतु समाजाक आमगेलो संदेशु जाव्नु आस्स.

परमात्मागेल्या चरणांतुयि हीचि प्रार्थना कि तो सगळ्यांगल्या हृदयांतु प्रेम इत्यादि सद्भाव जागृत कोरो.

ॐ तत्सत्

प्रकृत परिस्थिति कशि आस्स म्हळळलें सर्वांगेल्या अनुभवाचें जाव्नु आस्स. दिन परीचें जीवन कष्टसाध्य जाव्नु आश्शिले वेळारी ही दीपावलि इत्याक आय्लि म्हुणु अनेक जणांक दिसुक फाव आस. जाल्यारि ह्या परबेच्या निमित्तानें आपणागेल्या शक्तिच्या भायर खर्चु कोर्का म्हुणु ना. आपणागेले बंधु-बांधव, इष्ट-मित्र हांका मेळोव्नु घेव्नु सादा रीतिने जाल्लल्तरि प्रीतिनें तोंड गोड कोर्नु घेच्वें आनि बाह्य उपचारांपेक्षां अंतःकरणांतु आश्शिलतस्ले वैमनस्य, विरोधु वगैरे दुष्ट भाव सोण्णु दीव्नु परस्पर सौमनस्य, प्रीति वगैरे सद्भाव जाग्रत कोर्नु घेव्नु तदनुरुप वर्तन दवोर्चे होचि ह्या परबेचो मुख्य उद्देशु जाव्नु आरस.

ह्या परबेक आनि नरकासुरागेल्या संहारक संबंधु लायिल्लो दिस्ता. नरकासुरागेल्या अंत्यकालारि कृष्णाने ताक्का वरु माग म्हुणु सांगिले वेळारि तान्ने सांगले कि माक्का स्वंत उद्धाराचि आशा ना, जाल्यारि लोकहिताखातिर हांव वरु माग्तां, हांवे गेल्लेले दिवसु कोणकि मंगलस्नान कर्ताति तान्नि अधोगतिक वचनात्तिलें ऊर्ध्वगति पांव्का. श्रीकृष्णपरमात्मागेल्या सान्निध्यांतु प्राणत्यागु केलेल्या ताक्कायि उर्ध्वगति मेळ्ळी हें विगंड सांग्चे अगत्य ना. जाल्यारि संपूर्ण जीवनांतुं राजस आणि तामस प्रकृतिचो जाव्नु आशिल्या नरकासुराक अखैरेक स्वार्थभावना पूरा नष्चट जाव्नु केवल लोकहिताचि भावना जागृत जाल्लो हो संदर्भु विशेष महत्वाचो जाव्नु आस्स.

असल्या ह्या परबेच्या वेळारि सर्वांनि आण्णागेल्या असहाय्य आनि कष्टी जाव्नु आश्शिल्या संबंधी परिचित लोकांक यथाशक्ति सहायु कोर्नु तांका सुखी कोर्चो निर्धारु कोर्नु त्याप्रकार चल्नु तन्मूलक समाजांतु सुख समाधानाचो प्रसारु जास्शि प्रयत्न कोर्का हीचि सर्वांक आमगेलि सूचना आनि तशीचि परमात्मु सर्वांक प्रेरणा कोरो म्हुणु तागेल्या चरणांतु प्रार्थनायि आस्स.

ॐ तत्सत्

ही 'केनरा सारस्वता'ची दीपावलि संचिका प्रकट जात्ता. ह्या संचिकेखात्तिर संदेशरुपाने हे दोन शब्द बरयिल्ले जाव्नु आस्सति.

ह्या उत्सवाच्या नांवाक अनुरुप जाव्नु दीवे लाव्नु अंधकारु दूर कर्ताति. हें आम्मि जीवनांतु कोर्का जाल्लल्या साधनेक द्योतक जाल्ललतस्लें एक संकेतरुप कार्य जाव्नु आस्स. जीवु वस्तुतः चैतन्यरूप जाव्नु आस्स, त्या चैतन्याचो प्रकाशु तागेल्या अंतःकरणांतु ज्ञान, प्रेम, आनंदु इत्यादि रुपानें प्रकट जांव्का. हो प्रकाशु अंधकाररुप अज्ञानानें आनि तत्कार्यरुप मोहु, द्वेषु, शोकु इत्यादि विकारांनें आच्छादित जाल्ला. जीवानें, विचारानें, ज्ञानवृद्धि कोर्नु प्रेम, आनंदु, दया इत्यादि दैवी संपत्तिनें आण्णालें अंतःकरण प्रकाशित कोर्नु तांतुलो अज्ञान, मोहु वगैरे अंधकारू दूर कोर्का आनि तद्वारा आप्पण स्वतः आनंदित जाव्नु दुसऱ्यांकयि आनंदु दिंव्चाक प्रयत्न कोर्का हें तांगेल्या जीवनांतुलें एक मख्य ध्येय जाव्नु आस्स.

ह्या ध्येया दिक्काक ही दीपावलि सर्वांक प्रवृत्ति आस्स कोरो हीचि ह्या शुभप्रसंगांतु परमात्मागेल्या चरणांतु आमगेली प्रार्थना.

ॐ तत्सत्

विजयी राष्ट्रांनि शत्रुंगेल्या हांत्तातुल्याने सुट्टयिल्या भूतपूर्व स्वकीय अंकित देशांक चल्लोंचि रीति अथवा युद्धावेळारि तान्नि सांगिल्या उच्च तत्त्वांक आनि आत्तांच्या तांगेल्या कृतिक ताळ-मेळु नात्तिलें पळैल्यारि युद्ध राब्बिल्तरी युद्धाचें बीज आसुरी संपत्ति निःशेष जाल्लल्वारि दिसना. अस्लि आसुर प्रवृत्ति राष्ट्रांच्या पुढाऱ्यांतुं मात्र न्हयि किंतु देशांच्या, प्रांताच्या, समाजांच्या अथवा कुटुंबांच्या पुढाऱ्यांतुंयि थोडे बहुत प्रमाणाने एक ना एक रीतिने आश्शिलि दिसूनु यात्ता. समाजांतु स्वार्थत्यागु कोर्नु समाजसेवेंतु प्रवृत्त जाल्लल्या पुढाऱ्यांतु सुद्दां एकेक फंतां अभिमानु आनी गर्वाचो उदयु जाव्नु तन्मूलक विवाद तंटे उपस्थित जाव्नु समाजाच्या अभ्युदयाक अड्डि जात्ता. कुटुंबांतु परस्पर प्रेमा बदलाक स्वार्थप्रेरणेने व्याज्यँ व्यवहार कोर्नु दोन्नि पक्षांकयि निष्कारण नष्टाक गुरि कर्तले तेवयि आस्सतिचि. अनेक फंतां आपणागेलो स्वार्थु नास्तना फक्त दायादमत्सराने दुस्त्र्यांक नष्ट पावैतले 'ते के न जानीमहे' म्हुणु भर्तृहरिने सांगिल्या कोटिंतुले महानुभावयि दिस्ताति.

अशिक्षितांतुं मात्र न्हंतां 'वैदुष्यं विदुषा तद्वद्भुक्तये न तु मुक्तये' म्हुणु आचार्यांनि म्हळ्ळल्वारि सुशिक्षितांतुं सुद्दां हे दोष आश्शिले पळैल्यारि हो दुर्दमनीय जाल्ललो आसुर स्वभावु दूर कोरुक पुनः पुनः विचारू आनि प्रयत्न कोर्चि आवश्यकता व्यक्त जात्ता. अस्लें आत्मशोधन कोरुक दीपावळि अस्लि परब आम्कां संदर्भु हाण्णु दित्ता. ह्या वेळारि सर्वांनि आत्मनिरीक्षण कोर्नु भोगैश्वर्यप्रसक्ति, निष्ठुरता,

अभिमानु, दर्पु वगैरे आसुर संपत्तिरूप अंधकारु आपणागेल्या हृदयांतु आस्त्यारि तो दूर कोर्नु अनासक्ति, भूतदया, विनयु, प्रेम इत्यादि दैवी संपत्तिरूप प्रकाशाने तें प्रकाशित कोरुक प्रयत्न केल्यारि दीपावळि आचरण केल्ललें सार्थक जात्ता.

जनतेतुं दैवी संपत्तिचो उत्तरोत्तर उत्कर्षु जाव्नु तन्मूलक सर्व लोक सुख, शांति आनि समृद्धिक पात्र जावोति हीचि ह्या समयारि त्या दयाघन परमात्मागेल्या चरणांतुं आमगेली प्रार्थना.

ॐ तत्सत्

थोडे दिवसांपूर्वी येव्नु गेल्लेल्या नवरात्रिंतु सर्वांनि यथासाध्य शक्तिगेलि उपासना केल्या.

शक्ति उपासनेचो उद्देशु शक्ति संपादन. शक्ति मुख्य दोनि विधाचि. क्रियाशक्ति आनि ज्ञान शक्ति. द्रव्यशक्ति, बुद्धिशक्ति, इच्छाशक्ति, वगैरे अनेक विधाचि शक्ति आश्शिलतरि ती सर्व प्रयत्नसाध्य जाल्लल्मितिं तिक्का क्रियाशक्तिंतु समावेशु कोर्येद. ज्ञानशक्ति सुद्दां प्रयत्न साध्यचि. जाल्यारी बाकि सर्व विधाचि शक्ति अंधशक्ति जाव्नु आस्सुनु ही ज्ञानशक्ति प्रकाशरुप जाल्लल्मितिं हीं विंगड परिगणनेक अर्ह जाव्नु आस्स.

अभ्युदयाक, आत्मरक्षणाक, परोपकाराक आनि अन्यायाच्या प्रतीकाराक क्रियाशक्ति अगत्य आस्स.

आत्मरक्षण अथवा अन्यायाचो प्रतिकारु अवश्य पळ्यारि बलप्रयोगाने सुद्दां कोर्का कि तें कार्य पूर्ण अहिंसेने साध्य कोर्नु घेंव्का म्हळ्ळेलो विषयु मतभेदाक आस्पद जाल्ला. योगी, भक्त, ज्ञानी, वगैरे महात्मांक दुस्रो मार्गु साध्य आस्स. तशीचि अहिंसातत्वांतु अप्रचलित मनोदार्ढ्य आस्सुनु आश्रित लोकांगेली वगैरे जबाबदारि नात्तिल्यानिं ह्या मार्गाचें अवलंबन कोर्येद. जाल्यारि बाकि सामान्य जनतेक सर्व मानवसमाजु अहिंसापर जात्ता म्हणसरि निरुपाय जाव्नु प्रथम मार्गु श्रेयस्कर दिस्ता.

क्रियाशक्तिचो दुरुपयोगु जायनातिलें योग्य विनियोगु जांव्का जाल्यारि तिक्का मार्गदर्शक जाव्नु ज्ञानशक्ति अगत्य आस्स. ही सुद्दां लौकिकज्ञान अंधशक्तिचि म्हुणु दिस्ता. हो विषयु आजि विद्यावंत सुसंस्कृत राष्ट्रानिं स्वार्थवश जाव्नु दुर्बल राष्ट्रांच्या न्याय्य हक्काचेरि आक्रमण कोर्चे पळैल्यारि व्यक्त जात्ता. जाल्लत्मितिं लौकिकज्ञानाकयि अध्यात्मज्ञानशक्तिनेची मार्गदर्शन कोर्का.

अश्शि सर्वश्रेष्ठ जाव्नु आशिल्या आनि 'आदित्यवज्ज्ञानं प्रकाशयति तत्परम्' ह्या श्रीकृष्णपरमात्मागेल्या वचनाप्रकार परमात्मागेलें दर्शन थायि कोर्नु दीव्नु जन्माच्या साफल्याक कारण जाल्लल्या दिव्य प्रकाशरुप ह्या अध्यात्मज्ञानशक्ति दिक्काक हो दीपावलिच्या दीपाचो प्रकाशु लोकांक प्रवृत्त कोरो म्हुणु त्या कोटि सुर्यप्रकाश परमात्मागेल्या चरणांतु ह्या शुभ समयारि आमगेलि प्रार्थना.

ॐ तत्सत्

दीपवळि यात्ता. ह्या वेळारि सर्वांनिं परस्पर प्रीति, सहानुभुति, सहकार इत्यादि समाजाच्या अभ्युदयाक पोषक जाल्लतस्ले गुण वृद्धि कोर्नु घेंच्चेतस्ले व्यवहार रुढिंतुं आस्सति.

ह्या चारि दिवसांतु इष्ट-मित्रानिं, बंधु-बांधवांनिं एकडे मेळ्यारि नप्रो. नित्या जीवनांतु समाजाच्या ऐक्याक अनुकूल आचरण दवोर्नु घेंव्का.

ऐक्य संपादन कोरुक अवश्य आश्शिल्या अनेक गुणांतु विधेयत्व आनि परमतसहिष्णुता हे दोनि मुख्य जाव्नु आस्सति. आजि आम्गेल्या समाजांतु एक्ळो सांग्तलो, एकळो आय्कतलो हें दृश्य चडावत जाव्नु दिसना. सग्ळेयि सांग्तलेचि. अनेक संस्थांतु सुदैवाने योग्य पुढारि मेळ्यारि तांगेलि सेवा उपयोगु जाल्लित्ले दीर्घकाल घेंव्का म्हुणु लोकांक दिसना. हाक्का कारण विधेयतेचि न्यूनता. हीचि संगति परमतसहिष्णुतेचि. उदाहरणार्थ-सुधारक आनि सांप्रदायिक. हान्नि आपण्णागेल्या विश्वासाक सम जाव्नु आप्णे चल्नु दुस्त्रांक तांगेल्या विश्वासाप्रकार चल्लूक सोळ्यारि समाजांतु क्षोभाक कारण आस्सना. तश्शि न्हयि जाव्नु सांप्रदायिकांनिं तांगेल्या विश्वासाप्रकार उच्च तत्त्वं म्हुणु लेक्कित्या देवभक्ति, धर्माचरण इत्यादिंखातिर तांगेलो दुड्डु खर्चोनु देवस्थानाचे विनियोग, उत्सव अथवा धार्मिक प्रचारु वगैरे केल्यारि हें सर्व अपव्ययु म्हुणु सुधारकांनि ताक्का विरोधु तशीचि कोर्चो; सुधारक आम्गेल्या रीतिक सोण्णु चल्ताति म्हुणु सांप्रदायिकानिं तांगेले तोंड

पळैना जांव्चे; अश्शि केल्यारि समाजांतु ऐक्य, शांति, अभ्युदय इत्यादिक जागा मेळशिना.

समाजाच्या संघटनेक प्रतिकूल जायनात्तिलें अनुकूल जाव्नु चल्लशि परमात्मु सर्वांक प्रेरणा दिवो म्हुणु ह्या शुभसमयारि त्या मंगलमय प्रभुगेल्या चरणांतु आमगेलि प्रार्थना.

ॐ तत्सत्

दैवी स्वभावाने आसुर स्वभावारि विजयु संपादन केल्ललो उत्सवु दीपावलि जाव्नु आस्स. ह्या वेळारि प्रति एकळ्याने आत्मपरीक्षण कोर्नु आण्णागेल्या स्वभावांतु आशिल्ले दम्भु, दर्पु, अभिमान, क्रोधु, वगैरे आसुर भाव सोण्णु दीव्नु अभय सत्वसंशुद्धि इत्यादि दिव्य भाव जागृत कोर्नु तदनुरूप आचरण कोर्चो निर्धार कोर्का.

दीपावलिच्या दीव्यांचो प्रकाशु 'तस्य भासा सर्वमिदं विभाति' म्हुणु सांगिल्या सर्वांकयि प्रकाशकु जाव्नु आशिल्या परमात्मादिक्कांक आम्गेलें लक्ष्य ताण्ता. ताक्का आवरण कोर्नु आशिले मायारूप अन्धकारू दूर कोर्नु तागेलो प्रकाशु पोळोंचाक सुलभ उपायु 'मामेव ये प्रपद्यन्ते मायामेतां तरन्ति ते' म्हुणु श्रीकृष्परमात्माने सांगिल्ले प्रकार तागेलि प्रपत्ति अनन्य शरणागति जाव्नु आस्स.

अस्लें उपासन तांगतांगेल्या विश्वासु आनि समजूति प्रकार कोरूक लोकांक स्वातंत्र्य आस्का. जाल्यारी वास्तविक जावो आभासिक जावो बहुमताच्या आश्रयाचेरि आनि सत्तेच्या बलारि ह्या स्वातंत्र्यांतु हस्तक्षेप कोरुक आरम्भु जाल्ला. सामाजिक अथवा खासगि देवालयांतु संबंध पाविल्यांगेल्या इच्छेविरुद्ध दुसऱ्यांक प्रवेशु दिवोंचाक कायदे-कानून कोर्ची प्रवृत्ति पूर्वोक्त आसूर भावाकचि शोभता.

जाल्लल्मितिं केवल अज्ञानान्धकारू दूर कोरूक मात्र न्हयि किंतु साधकांगेल्या साधनेंतु आड येंव्चा आसूर भावाच्या निवृत्ति खातिरयि

आस्तिक जनतेनें गायत्री जपाराधन भगवन्नाम-संकीर्तन इत्यादि रुपाने विशेष रीतिने परमात्मागेलें ध्यान उपासन कोर्चे अवश्य आस्स.

'धियो यो नः प्रचोदयात्' म्हुणु वेदाने सांगिल्लो सर्व प्रेरकु परमात्मु सर्वांक शुभ प्रेरणा दिवो म्हुणु ह्या मंगल समयारि तागेल्या चरणांतु आमगेलि प्रार्थना.

ॐ तत्सत्

श्रीकृष्णपरमात्माने नरकासुराक संहारू कोर्नु जगाक मंगल़ केल्लल्याचें स्मारक हो दीपावलि उत्सवु होवयि एक देवासुर संग्रामांतुं देवांक जाल्लो जयु जाव्नु आस्स.

हो संग्रामु पुराणकालांतुं अथवा इतिहासकालांतु जाल्लो गेल्लो अश्शि न्हयि, किंतु आत्तंयि आनि मुखारियि प्रति एकळ्यागेल्या हृदयांतु सदासर्वदा चालु आस्ता. इंद्रियलौल्य, क्रोधु, लोभु, द्वेषु, मोहु इत्यादि संसारबंध दृढ कोरुक कारण जाल्लल्या आसुर भावांक वैराग्य आनि त्यागु, प्रेम, भक्ति, ज्ञान वगैरे संसारबंधांतु थाव्नु विमोचन कोरुक कारण जाव्नु आश्शिल्या दैवभावांक जांव्चो संघर्षुचि तो. ह्या आसुर भावांचेरि चेरि दैवभावांचो विजयु संपादन कोर्नु आम्गेल्या अंतःकरणाचो स्वभावु जाव्नु आश्शिल्लि ज्ञानशक्ति निर्मल कोर्नु 'ज्ञानदीपेन भास्वता' म्हुणु श्रीकृष्णपरमात्मानें वर्णन केल्ललो आत्मज्ञानरूपि दीवो प्रज्वलित केल्यारि आम्मि दीपावलि आचरण केल्लेलें सार्थक जात्ता.

अस्ल्या दीपावलिच्या आचरणा दिक्काक परमात्मु सर्वांक प्रेरणा कोरो म्हुणु तागेल्या चरणांतुं ह्या मंगलमय समयाचेरि आमगेलि प्रार्थना.

ॐ तत्सत्

दीपावलि संदेश १९५०

दीपावलिंतु नांवांक समजाव्नु दिव्यांचो प्रकाशु आस्ता. लोक आप्तेष्ट बंधु-बांधवासमेत प्रेमपूर्वक सुखसंतोषांतुं वेळु घाल्तांति. आम्गेल्या धर्मांतु प्रवृत्तिमार्गांचि रचना अध्यात्मसाधनेक अनुकूल जाश्शि त्या प्रकार दीपावलिचे व्यवहारयि अध्यात्म तत्वांचे द्योतक म्हुणु घेव्येद. जड प्रकाशांतु थाव्नु आनि भक्ष्य-पेयांच्या तृप्तिंतु थाव्नु तशीचि आप्तेष्टांगेल्या प्रेमांतु-सहवास-सुखांतु थाव्नु सर्वांक प्रकाशकु, ज्ञान-स्वरुप सर्वात्मकु आनि तृप्तिसुख-संतोषाची उगमु अत एव परप्रेमास्पदु जाव्नु आश्शिल्या परमात्मा दिक्काक आम्मी नजर दिंव्का. त्या परमात्मागेलें ज्ञान संपादन कोर्नु घेने जाल्यारी बाकिचे प्रकाश आस्सूनुयि आम्मि दृष्टिहीनचि जात्तांति. विषयांचे सेवनाने तृप्ति सर्वथा शक्य ना, म्हुणु मनुस्मृति आनि अनुभवुयि सांग्ता. जाल्लल्मितिं रागद्वेषानिं रहित जाव्नु अगत्य आश्शिले अन्नपानादि विषय सेवन कोर्नु उपशमाचि-विषयसेवनाचि न्हई-तृप्ति पांव्का म्हुणु श्रीकृष्णपरमात्मागेलो उपदेशु ''यो वै भूमा तत्सुखं, नाल्पे सुखमस्ति'' अनन्त जाव्नु आशिल्लो परमात्मुचि सुखस्वरुपु, परिच्छिन्न प्रपंचांतु सुख ना म्हुणु श्रुति सांग्ता. जाल्लल्मितीं प्रपंचांतुं अनासक्ति संपादन कोर्नु घेव्नु भक्ति-प्रेमपूर्वक परमात्मागेलें उपासन-ध्यानरुप मानसिक सहवासु कोर्नुं तागेलें ज्ञान कोर्नु घेंव्चाक आनि तज्जन्य सुख संतोषु तृप्ति पांव्चाक प्रयत्न करश्शि तोचि सर्वांक प्रेरणा दिवो म्हुणु तागेल्या चरणांतु प्रार्थना.

ॐ तत्सत्

श्रीकृष्णपरमात्माने नरकासुराक संहारु कोर्नु लोकांक मंगल केल्लेल्याचे स्मारक हो दीपावलि उत्सवु म्हुणु पौराणिक सांग्ताति. म्हळ्यारि दैवी संपत्तिने आसुरी संपत्तिचेरि जयु मेळयिल्याचें हें द्योतक जाव्नु आस्स.

समाजांतु परस्पर विद्वेषु, कलहु वगैरेक कारण जाव्नु आश्शिले आनि आसुरी संपत्तिचे मूल दोष म्हुणु श्रीकृष्णपरमात्माने सांगिल्ले कामु, क्रोधु तशीचि लोभु हांकां आप्णागेल्या हृदयांतु थाव्नु दूर कोर्नु अन्योन्य सौहार्द व ऐक्याक कारण जाल्ले त्यागु, प्रेम आनि संतोषु हांगेलि वृद्धि कोरुक प्रति एकळ्यानें प्रयत्न केल्यारि ह्या उत्सवाचें सार्थक जात्ता.

जातीयता देशाच्या अधोगतिक कारण म्हुणु खंयि गेल्लल्तरी उद्घोषु कान्नारि पडत आस्तना समाजाचि खब्बरी उल्लोंव्वें अप्रस्तुत जात्ता. जाल्यारि कुटुंब-व्यवस्था आस्ससरि समाजाचें नांव घेंव्चाक भिव्का म्हुणु ना. कुटुंबाचीचि स्वाभाविक व्याप्ति समाजांतु परिणत जात्ता. आप्पण कुटुंब, समाजु, देशु राष्ट्र आनि आखैरेक 'उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुंबकम्' ह्या वचना प्रमाणे जग; अश्शि मनुष्यगेल्या दृष्टिचो क्रमशः विकासु जात्ता. उन्नत शिखरावारि आश्शिल्या विशाल दृष्टिक आनि तिक्का एकि पायरि जाव्नु आश्शिल्या समाजवात्सल्याक परस्पर विरोधु अथवा विसंगति ना. अर्जुनाने प्रस्तुत केल्लेल्या शाश्वत कुलधर्म आनि जातिधर्माचें श्रीकृष्णपरमात्माने निराकरण कर्ने. लोकांतु उदारचरित महानुभाव थोडेचि आस्ताति. चडावत आस्तले लघुचेता पामर जनचि. उच्च ध्येय आदर्शु इद्दारि दवोर्नु घेव्नु ताज्या प्राप्तिखातिर

प्रयत्न कोर्चे स्तुत्यचि. जाल्यारि आप्णागेल्या अंतःकरणाच्या प्रगतिक सम जाव्नु लोकांनि कुटुंबवात्सल्य, समाजवात्सल्य वगैरे दाकैल्यारि तो देशद्रोहु म्हुणु इत्याक लेक्का म्हळ्ळलें कळ्ना.

सर्वांक दैवी संपत्तिचि वृद्धि जाव्नु तन्मूलक समाजाचें अभ्युदय जावो म्हुणु परमात्मागेल्या चरणांतु आमगेलि ह्या शुभ समयाचेरि प्रार्थना.

ॐ तत्सत्

एक्ळो वेदान्ति सांगताः

चित्रमकृत्रिममेकं ज्योतिर्निहितं गुहास्वसंख्यासु ।

तदुपरि किमपि तमिस्त्र त्रैलोक्यमदो विविच्य दर्शयति ॥

एक्कूचि दिवो, तोवयि अकृत्रिम्, असंख्य गुहांतुं दवर्ला खैं. त्या दिव्या ऊंच (मुळाक न्हयि) एकु कस्ल्कि काळोकु खैं. आनि तो काळोकु हें त्रैलोक्य सोडोव्नु दाकैता खैं. आश्चर्य हें !

वेदान्ताचें मूल तत्व चमत्कारु कोर्नु ह्या वचनांतुं व्यक्त केल्यां. अनंत बुद्धि गुहांतु जीवरुपानें आश्शिलो परमात्मुचि तो दिवो. त्या जीवागेलें निजरुप धांपुनु ह्या दृश्य जगाचो आभासु दाकैतलि अनिर्वाच्य अविद्याचि तो काळोकु.

निद्रारुप तमानें आवृत्त जाव्नु भीकर स्वप्नदृश्य पोळोव्नु भयभीत जाल्ल्याक प्रबोधु (जागि जांव्चें) चि अभय प्राप्तिचें साधन. तशीचि ह्या द्वंद्वरूप असुखात्माक संसाराच्या तापत्रयानि तप्त जाल्ल्या जीवाक ह्या संसारानुभवाक कारण जाल्ल्लि अज्ञान निद्रा दूर जाव्नु शाश्वत शांति-नित्यसुख मेळ्का जाल्यारि त्या परमात्मागेलें ज्ञानचि-तागेल्या प्रकाशानें आप्णागेलि हृदयगुहा प्रकाशित कोर्नु घेव्न्चेंचि साधन.

कारण, तो परमात्मुचि मुळांतु आनंदरुप जाव्नु आस्स. ग्रामसिंहु (वांक्डे बाल्ल्याचो) हाड्डा-कुडको चाब्डाय्तना आप्णागेल्याचि पिवळ्यांतु थाव्नु आयिल्या रक्ताचो स्वादु ह्या हाड्डांतुथाव्नु मेळ्ता

म्हुणु लेक्ता. तश्शि आम्मि विषयानुभवांतु थाव्नु मेळ्ता म्हुणु लेक्चो आनंदु तत्त्वतः त्या परमात्मागेल्याचि आनंदसिंधुच्या एक्का बिंदुचो लवलेशु.

ह्या दीपावलिचो कृत्रिम प्रकाशु, क्षणिक आनंदु त्या अकृत्रिम ज्योतिरूप नित्यसुखात्माक परमात्माकडे सर्वांक प्रवृत्ति आस्स कोरो म्हुणु ह्या मंगलमय उत्सवासंदर्भांतुं ह्या दयाघन परमात्मागेल्या चरणांतु प्रार्थना.

ॐ तत्सत्

दीपावलि आसुरी संपत्तिचेरि दैवी संपत्तिने मेळयिल्या विजयाचें प्रतीक जाव्नु आस्स. दैवी संपत्ति सत्वगुणप्रधान आनि आसुरी संपत्ति रजस्तमोगुणप्रधान जाव्नु आस्सति. जीवागेल्या स्वभावांतु-अन्तःकरणांतुं- ह्या तिन्नियि गुणांक परस्पर संघर्षु आशिल्तरि मुख्य संघर्षु आस्चो सत्वगुणाक आनि रजस्तमोगुणांक.

दैवी संपत्तिचे लोक आप्णागेलेंयि कल्याण कोर्नु घेव्नु दुस्त्र्यांगेलेंयि बरेपण कर्तांति हाज्जे समऽचि विरुद्ध आसुरी संपत्तिचे जीव दुस्त्र्यांकयि पीडा दीव्नु आप्पणयि अधोगतिक वत्तांति. हो विषयु श्रीकृष्णपरमात्माने सत्वसंशुद्धि (अन्तःकरण शुद्धि), दान, भूतदया, मार्दव (सौम्यत्व,) क्षमा, अद्रोह, इत्यादि गुण दैवी संपत्तिच्या वांट्याक आनि दंभु, दर्पु, अभिमानु, क्रोधु, पारुष्य (निष्ठुरत्व) वगैरे आसुरि संपत्तिच्या वांट्याक घाल्ललें पळैल्यारि व्यक्त जात्ता.

दैवी संपत्तिचो मनुष्यु ह्या दृश्य जगाक आधारु जाव्नु एकि अदृश्यशक्ति-नित्य-सुखात्मक ईश्वरु-आस्स म्हुणु लेक्कुनु त्या उच्च ध्येयाच्या प्राप्तिखातिर सदाचारपरायणु जात्ता, ऐहिक क्षुद्र सुखाचो-स्वार्थाचो-त्यागु कोरुक तयार जात्ता. तोचि ईश्वरु विश्वात्मकु ह्या भावनेने विश्वाच्या शुभचिन्तनांतु-सेवेंतु-तत्पर जात्ता हाज्जे उलट 'ह्या जगाक प्रतिष्ठा जाव्नु एकधर्मु अथवा एकु ईश्वरु ना, जग (आप्णावारीचि) असत्यपरायण, कामप्रेरित स्त्री-पुरुषांगेल्या परस्पर व्यवहारानें जग चल्ता, हाज्जे भाय्र कस्लें आस्स?' ही आसुरी

संपत्तिचांगेलि दृष्टि. ह्या दृष्टिनें कामभोगपरायण जाव्नु अन्यायानेयि धनसंचयु कर्तल्तस्ले आनि अहंकारु, दर्पु, कोधु, इत्यादि विकारांच्या प्राबल्याने. कठोर कृत्यं कर्तल्तस्ले हे आसुरी लोक जगाचे शत्रु जाव्नु ताज्ञे नाशाक कारण जात्ताति. ॲटम बाँब, हायड्रोजन बाँब वगैरे ह्या संपत्तिचेचि परिणाम.

प्रकाशात्मक दैवी संपत्तिचि अभिवृद्धि कोर्नु घेव्नु तद्वारा आण्णागेल्या स्वभावांतुं आश्शिल्लि अन्धकारमय आसुरी संपत्ति दूर कोर्नु श्रेयोभागि जायूशि भक्तवत्सल परमात्मु सर्वांक प्रेरणा कोरो म्हुणु तागेल्या चरणकमलांतु प्रार्थना.

ॐ तत्सत्

दीपावलि संदेश १९५४

श्रीकृष्णपरमात्माने लोकसंकट नरकासुराक संहार कोर्नु लोकाक शांति आनि मंगल प्रदान केल्लें हाज्जें द्योतक दीपावलि म्हुणु पौराणिक सांग्तात.

व्यक्ति अथवा समाजु मुख्यतः शांतिची अपेक्षा कर्ता. समाजाच्या शांतिकयि शांतिसंपन्न व्यक्तिचि कारण जात्तात, तेन्मितिं प्रथम व्यक्तिंनि शांतिचें साधन कोर्का.

शांतिचे अनेक मार्ग आस्सति. तांतुं श्रीकृष्णपरमात्माने अर्जुनागेले द्वारा जगाक दिल्लल्या गीतारूपी संदेशांतुलो एक मार्गु ह्या मंगलमय संदर्भांतुं उग्डासु केल्यारि तांतुंचि आम्गेलोयि संदेशु यात्ता.

अस्थिर जाल्लल्या लौकिक संनिवेशांपेक्षां शाश्वत आध्यात्मिक तत्त्वाचें अवलंबन कोर्नु आम्मि शांतिचें साधन कोर्चें योग्य. अतः 'यज्ञ आनि तपं हांचो भोक्ता, सर्व लोकांचो महान् ईश्वरु, सर्व प्राणिमात्रांगेलो सुहृत् आश्शिल्या माक्का समजल्यारि शांति मेळ्ता,' म्हुणु श्रीकृष्णपरमात्मु सांग्ता. यज्ञ आत्तं लुप्तप्राय जाल्याति. तांगेले जाग्यारि लोकसेवा आयल्या. त्या सेवेचो उद्देशु लोकाराधन म्हुणु लेक्कनात्तिलें सर्वांतर्यामी ईश्वरागेलो संतोषु म्हुणु लेकल्यारि कदाचित् आम्मि केल्लल्या सेवेविषयांतु लोकानिं अन्यथा भावना कोर्नु संतोषु पाव्नात्तिल्तरी आम्कां असमाधानाक कारण आस्सना. तपं अथवा साधनं हींवयि लौकिक सिद्धि, शक्ति वगैरे नश्वर ध्येयांखातिर कर्नास्तना अंततः ईश्वरागेल्या प्राप्तिक साधन जायशि केल्यारि लौकिक ध्येयांच्या अनित्यत्वाने जांव्चि

तस्लि अशांति दूर जात्ता. आम्मि आश्रय केल्ललो देवु सर्व लोकांचो महेश्वरु म्हुणु आम्कां गोत्तु आस्ल्यारि आम्गेल्या भविष्याविषयांतुं आम्मि केद्नायि निश्चिंत आस्ताति. तो परमात्मु सर्व प्राण्यांगेलो सुहृत् अर्थात् प्रत्युपकाराची अपेक्षा कर्नात्तिले उपकारु कर्तल्तस्लो हें समजून घेत्ल्यारि आम्गेल्या भक्तितुं लोप, दोष, वैगुण्य, आश्शिल्तरी तो आम्कां सर्वथा सोण्णु दीना हो विश्वासु, हें समाधान सदासर्वदा आम्गेल्या हृदयांतुं जागृत आस्ता मात्र न्हयि, आम्गेलो आराध्य जाल्लल्तस्लो परमात्मु जरि सर्व प्राण्यांगेलो सुहृत् जाव्नु आस्स तावळि आम्मियि तशीचि आस्का म्हुणु दिसून आम्चांतुं परस्पर आश्शिले द्वेष, वैषम्यं हीं दूर जाव्नु अन्योन्य सुहृद्भावु उद्भव जात्ता आनि तन्मूलक समाजांतुंयि शांतिचो उदयु जात्ता. एतादृश सद्भावना सर्वांगेल्या हृदयांतुं जागृत जावोति आनि तन्मूलक व्यक्ति व समाजु शांतिसमृद्ध जावोति म्हुणु त्या करुणावरुणालय जगदीशागेल्या चरणांतुं प्रार्थना.

ॐ तत्सत्

सर्व व्यवहारांक आत्मचैतन्याचो प्रकाशुचि मूलतः साधन म्हुणु दाकोव्नु तद्द्वारा आत्मस्वरूपाचो प्रत्युयु कोर्नु दिल्ललो बृहदारण्यकांतुल्या जनकयाज्ञवल्क्य-संवादांतुलो संदर्भु आचार्यानिं एकश्लोकींतुं गुरुशिष्यसंवादरुपाने अश्शि वर्णन केल्ला :

किं ज्योतिस्तव भानुमानहनि मे रात्रौ प्रदीपादिकम्
स्यादेवं रविदीपदर्शनविधौ किं ज्योतिराख्याहि मे ।
चक्षुस्तस्य निमीलनादिसमये किं धीर्धियो दर्शने
किं तत्राहमतो भवान् परमकं ज्योतिस्तदस्मि प्रभो ॥

''तुक्का प्रकाशु कस्लो? माक्का दिवसा सूर्यु आनि रात्रि दीवो चन्द्रु वगैरे प्रकाशु. आस्सद, जाल्यारि सूर्यु दीवो वगैरे पोळोव्नाक खंचो प्रकाशु म्हुणु सांग. दोळे. दोळे चिम्मि केल्लल्या इत्यादि समयांतुं कस्लो प्रकाशु? बुद्धि.

बुद्धिचें ज्ञान जांव्का जाल्यारि खंचो प्रकाशु? हांवचि.

तश्शि जाल्यारि तूंचि श्रेष्ठ प्रकाशु. होयि, सद्गुरो!''

अस्लें सर्व प्रकाशांक प्रकाशक जाव्नु आश्शिलें आत्मचैतन्ययि मायेने आवृत्त जाव्नु 'एष सर्वेषु भूतेषु गूढात्मा न प्रकाशते' म्हुणु सांगिल्ले प्रकार ताज्जें प्रकाशन आम्कां जाय्ना.

'तरति शोकमात्मवित्' इत्यादि श्रुतिवचनं शोकातीत जाव्नु आनन्दात्मक स्थिति पांव्नाक त्या आत्मागेलें ज्ञानचि साधन म्हुणु

सांग्याति. अतः वैराग्य, भक्ति, ध्यान वगैरे साधनांनिं त्या आत्मचैतन्याचें प्रकाशन कोर्नु घेंव्वेंचि मनुष्यजन्माचें सार्थक्य.

दीपावलिचो भौतिक प्रकाशु आत्मचैतन्यरूप मूल प्रकाशाचें स्मरण कोर्नु दीन्नु ताज्जे दिक्काक सर्वांक प्रवृत्ति आस्स कोरो म्हुणु ह्या मंगलमय संदर्भांतु त्या परमात्मागेल्या चरणांतुं आमगेलि प्रार्थना.

ॐ तत्सत्

आम्गेलें अंतःकरण सात्त्विक जाव्नु तन्मूलक तांतुं निर्मलता व एकाग्रता आस्सजांव्का आनि तसल्या योग्य अंतःकरणाने आम्मि हृदयांतुं त्या सच्चिदानन्द परमात्मागेलो अनुभव घेव्नु धन्य जांव्का म्हुणु आम्कां शास्त्राने उपदेशु केल्लल्या साधनांतुं यम आनि नियम हे अंतर्भावु पाव्तातिं. यम म्हळ्यारि व्यक्तिगेल्या उन्नति सांगातिचि समाजाच्या स्वास्थ्याकयि कारण जाल्लले सत्य, अहिंसा अस्तेय इत्यादि परस्पर व्यवहाररुप धर्म. नियम म्हळ्यारि मुख्यतः व्यक्तिक्गेल्या उद्धाराक साधन जाल्लले शौच, तप, स्वाध्यायु, ईश्वरप्रणिधान वगैरे धर्म. ही विविध साधनंयि समान महत्त्वाचिं जाव्नु आस्सति. जाल्यारि जगांतुं आपूणागेलो नेमु, निष्ठा, पूजा, पारायण हें सर्व योग्य रीतिरि पालन कोर्नु आश्शिल्लेयि कित्लेकि लोक व्यवहारांतुं सत्य, अहिंसा, न्यायु, सरलता इत्यादि पालन कर्नात्तिले दिसुनु यात्तातिं. हाक्का कारण आपूणागेलो देवु-धर्मु आनि व्यवहारु हांकां संबंधु ना म्हळ्ळलि चुक्कीचि भावना. अश्शि जाव्नये म्हळ्ळलेमितिंचि मनु 'आपणागेल्या नेमु-निष्ठेंतु कदाचित् व्यत्ययु आयिल्तरी हर्कत ना, जाल्यारि व्यवहारांतुं सत्य वगैरे सोण्णु दिव्नये' म्हळ्ळलो अर्थु येशि, 'यमान् सेवेत सततं न नित्यं नियमान् बुधः । यमान् पतत्यकुर्वाणो नियमान् केवलान् भजन्' । अश्शि उपदेशु कर्ता कि म्हुणु दिस्ता. आस्सो, ह्या यम.नियमादि साधनांच्या अनुष्ठानाने शुद्ध आणि एकाग्र जाल्लल्या अंतःकरानें 'ज्योतिषामपि तज्ज्योतिः' म्हुणु वर्णन केल्लल्या त्या चिद्घन परमात्मागेलें ध्यान केल्यारि तागेलो साक्षात्कारु जात्ता म्हुणु 'ज्ञान-प्रसादेन विशुद्धसत्त्वस्ततस्तु तं पश्यते

निष्कलं ध्यायमानः' हें श्रुतिवचन सांग्ता. हो साक्षात्कारु पाविल्यांकचि नित्यसुख मेळ्ता म्हळ्ळलें 'तमात्मस्थं येऽनुपश्यन्ति धीरास्तेषां सुखं शाश्वतं नेतरेषाम्' ह्या श्रुतिने व्यक्त जात्ता. दीपावळिच्या विविध प्रकाशांचो आनंदु सेवन कर्तना भित्तरि आश्शिल्या त्या आत्मसूर्याक विस्सर्नाश्शि आनि परमगतिरुप जाव्नु आश्शिल्या तागेल्या दिक्काक आनि ताज्जे खातिर जाव्नु पूर्वोक्त सत्य, अहिंसा इत्यादि साधनांच्या आचरादिक्काक सर्वांगेलें लक्ष्य वचशि परमात्मु अनुग्रह कोरो म्हुणु ह्या मंगलमय संदर्भांतुं तागेल्या चरणांतुं आमगेलि प्रार्थना.

ॐ तत्सत्

उत्सवां समयारि, विशेष जाव्नु दीपावळिंतुं मंगलमय परमात्मागेलें ध्यान पूजन वगैरे कोर्नु तो परमात्मु सर्वात्मक जाव्नु आश्शिल्मितिं सर्वांलाग्गि सौमनस्य प्रेम, शुभाकांक्षा इत्यादि सद्भावमूलक व्यवहार कर्तांति. हे सद्भाव सदा सर्वदा मनुष्यागेल्या हृदयांतुं आस्कांति. ते पुनः पुनः जागृत कोरुक उत्सवांचो उपयोगु जात्ता.

अस्ले सद्भाव स्थिर जांव्का जाल्यारि हांकां प्रतिबंधक जाल्लले द्वेषु, मत्सरु, तिरस्कारु वगैरे दोष दूर जांव्कांति. ते दोष वोच्का जाल्यारि आम्मि परमात्मागेलें सर्वात्मकत्व अर्थात् 'अविभक्तंच भूतेषु विभक्तमिव च स्थितम्' इत्यादि वचनांनिं प्रतिपादन केल्ललें आत्मागेलें एकत्व स्मरण कर्तचि आस्का.

परकीय व्यक्तिंतुं आश्शिलिं खंचिंकि निमित्तं आम्गेल्या हृदयांतुं द्वेषु, मत्सरु वगैरे विकार जागृत कर्तांति तींचि निमित्तं आत्मीय व्यक्तिंतुं आसल्यारि आम्कां ते विकार जाय्नांति. हाज्जें कारण आम्मि त्या व्यक्तिंतुं पोळोंव्चि आत्मीयता. आम्मि आत्मैकत्वाचें, अद्वैताचें अनुसंधान यथासाध्य कोर्नु तन्मूलक ही आत्मीयता सर्वांतुं पोळोंव्चाक प्रयत्न केल्यारि स्वभावतःचि आम्गेल्या हृदयांतुले विकार दूर जाव्नु थंयि प्रेम वगैरे सद्भाव वास कर्तांति.

आत्मैकत्वाच्या अनुसंधानाने सर्वांगेल्या हृदयांतुलो द्वेष-मत्सरादि अंधकारु दूर जाव्नु तें सौमनस्य प्रेम वगैरे सद्भावांनिं प्रकाशित जावो आनि तन्मूलक समाजु सुखशाली जावो हीचि ह्या शुभसमयारि त्या दयामय परमात्मागेल्या चरणांतुं आमगेलि प्रार्थना.

ॐ तत्सत्

केनरा सारस्वत एसोसियेशनाने स्वकीय मुखपत्राचि दीपावळिचि संचिका शिक्षणविषयक विशेष संचिका कोर्नु तांतुं दैहिक, वाङ्मयात्मक, तांत्रिक, शास्त्रीय, नैतिक, धार्मिक इत्यादि विविध रुपाने शिक्षणाचो परामर्शु, विचार विनिमयुजायूशि लेख, सूचना संग्रह कोर्चो अभिप्रायु केल्लो विषयु बहु संतोषकारक जाव्नु आस्स.

आम्गेलो संदेशु त्या दिशेने दिल्यारि जाय्द म्हुणु सूचना आयूल्या. जाल्यारि शिक्षणाच्या पूर्वोक्त बहुतेक रुपांतुं आम्कां अभिज्ञता ना. फक्त नैतिक, धार्मिक विषयांतुं दोनि शब्द सांग्येद परंतु त्या विषयांतु आम्मि कोरुक फाव आश्शिलि सूचना केनरा सारस्वताच्या जूनाच्या संचिकेंतुं संपादकीय अग्रलेखांतुंचि आयल्या. अतः आम्मि नवीन सांग्चें कस्ल्लेंयि ना. त्या सूचनेचेंचि समर्थन कोर्नु थोडें विवरण केल्लें जात्ता.

मनुष्यांक विनीतु, सद्गुणी, सदाचरणी कोर्चें हेंवयि शिक्षणाचें एक ध्येय जाव्नु आस्स. ह्या ध्येयाच्या सिद्धिक धार्मिक भावना विशेष सहायक जात्ता. मातृभक्ति, पितृभक्ति, आचार्यभक्ति इत्यादिरुपाने विनयु, विधेयत्व कश्शिकि धर्मांतुं उपदेश केल्यां, तशिचि सत्य, अहिंसा वगैरे नीतितत्त्वं आनि निर्वैरत्व, अक्रोधु, सौमनस्य इत्यादि सद्गुणयि सामान्य धर्माच्या आनि सदाचाराच्या रूपाने उपदेश केल्याति. नीतिमत्तेक धार्मिक भावनेचो आधारु आस्का जात्ता. रिक्शावाले, टांगावाले, वगैरे अशिक्षित लोकांनि प्रयाणिकांगेलो विस्सोर्नु सोळ्ळलो सामानु तांकां होर्नु दिल्लिं उदाहरणं अनेक

आस्सति. हाक्का कारण पापभीरुता, अर्थात् धार्मिक भावना. म्हणजे उलट धर्मभावनारहित शिक्षणाने पूर्वोक्त ध्येय साध्य जाव्चें दिसना.

धर्माचो, मात्र न्हयि, कर्ममात्राचोयि साक्षी फलदाता जगन्नियामकु सर्वांतर्यामी भक्तवत्सलु एक परमेश्वरु आस्स आनि तागेलें ज्ञान-तागेलि प्राप्ति-कोर्नु घेंव्चें हेंचि धर्माचें अंतिम ध्येय म्हुणु शास्त्र सांग्ता, त्या ईश्वरागेल्या विषयांतुं भक्ति, गौरव हींवयि अवश्य आस्सति. मनुष्यु केद्नायि अंतःकरणाचि शांति अपेक्षा कर्ता. ती शांति भगवद्भक्तिने,-आध्यात्मिकतेनें-कश्शिकि मेळ्ता तश्शि जगांतुंथाव्नु मेळ्ना. संतति, संपत्ति, समृद्धि, सौकर्य वगैरे भरपूर आस्सुनुयि लोक मनांतुं अशांत, अतृप्त, आश्शिले दिस्ताति. जाल्यारि एकाग्र चित्ताने परमात्मागेलें ध्यान कर्तल्या साधाकागेल्या विषयांतुं श्रीकृष्णपरमात्मु गीतेंतुं सांग्ता-'शान्तिं निर्वाणपरमां मत्संस्थामधिगच्छति'-'मगेल्या अनुग्रहाने मेळ्चि तस्लि आनि आखैरेक मोक्षांतुं पर्यवसान पाव्तलि तस्लि अर्थात् शाश्वत् शांति तो प्राप्त कोर्नु घेत्ता.'

प्रचलित शिक्षपद्धतिंतुं भगवद्भक्ति, धर्मु ह्या विषयांक विशेष आस्पद ना. त्या विषयांचें शिक्षण घरांतुंचि जांव्का. बाल्यदशेंतुंचि चेर्ड्वांगेल्या अंतःकरणांतुं ह्या विषयांचे बीजारोपण केल्यारि तें रूढमूल जात्ता. पुरुषांक तांगेल्या उद्योग धंद्यामितिं ह्यादिकाक लक्ष्य दिंव्चाक साध्य जाय्ना. जाल्लल्मितिं स्त्रियांनिचि चेर्ड्वांगेल्या अंतःकरणांतु धर्मु आनि भगवद्भक्ति हांकां संबंध पाविल्ले उच्च आदर्श, इतिहास-पुराणांतुल्या कथानकांच्या सहायाने प्रतिबिंबित केल्यारि तीं मुखारि समाजाचे योग्य घटक जाव्नु समाजाच्या अभ्युदयाक कारण जाव्नु,

आप्पणयि सुखसंपन्न जात्ताति. अस्तु, माकृशि सांगिल्ले प्रकार नैतिक, धार्मिक शिक्षणांविषयांतुं 'केनरा सारस्वता'ने केल्लिलि सूचना आम्कां योग्य दिशिल्मितिं त्या सूचनेचेंचि समर्थन आम्मि ह्या संदेशांतुं केल्यां.

समाजाच्या युवकांगेल्या शिक्षणसुधारणेविषयांतुं एसोसिएशनाने कोर्चे प्रयत्न सफल जाव्नु तांका योग्य शिक्षण आनि वळण मेळ्नु तान्नि क्रमेण आदर्शसमाजरूपाने परिणत जायशि परमात्मु अनुग्रहु कोरो म्हुणु ह्या मंगलमय प्रसंगांतुं तागेल्या चरणांतुं आमगेलि प्रार्थना.

ॐ तत्सत्

अनादिमायया सुप्तो यदा जीवः प्रबुध्यते ।
अजमनिद्रमस्वप्नमद्वैतं बुध्यते तदा ॥
(गौडपादकारिका, १,१६)

अनादि मायेने निद्रित जाल्ललो जीवु खंचे वेळारि जागि जात्ता (आत्मज्ञान पाव्ता) त्यावेळारि (तो आप्पण) मायारुप निद्रेने आनि संसाररूप स्वप्नाने रहित तशिचि जन्ममरणादिनिं वर्जित जाव्नु आश्शिलें (सच्चिदानंदरूप) अद्वैत तत्त्व (म्हुणु) समजता.

जाग्रदवस्थेंतुं अत्यंत सुखी जाव्नु आश्शिल्लो मनुष्यु सुद्दां निद्देंतुं आपूणागेलें सुखित्व विस्सर्ता. मात्र न्हयि, अनेक दुःखांचिं आनि कष्टांचिं स्वप्नं पळैता. सुखस्वप्नंयि पोळोंव्नाक पुरो. जाल्यारि स्वप्नांतुं सुखं मात्र भोग्तां, दुःखांचो अनुभवु घेना म्होणुक ताक्का स्वातंत्र्य ना. त्या दुःखांचो परिहारु जांव्का जाल्यारि स्वप्नाक कारण जाल्लल्या निद्देंतुंथाव्नु जागि जांव्का.

हो जीवु मुळांतुं आनंदरूप जाव्नु आस्स, जाल्यारि ताक्का मायारूप निद्रेने आवृत केल्लल्मितिं स्वस्वरूपाचि विस्मृति जाल्या. ताक्का हो मायेचो संबंधु केद्ना आनि कश्शि आय्लो म्हळ्ळलें सांगुक साध्य ना. कश्शिकि माया अनादि अनिर्वचनीय तश्शि हो जीवाक आयिल्लो तिगेलो संबंधुयि अनादि अनिर्वचनीय जाव्नु आस्स. ह्या अज्ञाननिद्रेंतुं तो क्लेशमय-दुःखमय-जाव्नु आश्शिल्या संसाररूप स्वप्नाचो अनुभवु घेत्तऽ आस्स. ह्या दुःखात्मक स्थितिचो नाशु जाव्नु ताक्का आत्मसुखाचि

प्राप्ति जांव्का जाल्यारि तान्ने अज्ञाननिद्रेंतुंथाव्नु जागि जांव्का. अर्थात् अतिशय प्रकाशशालि जाल्ल्या आत्मज्ञानदीपाने हें अज्ञानरूपी तम निवारण कोर्का. तावळि नित्य सुखाच्या प्राप्तिने तो कृतार्थु जात्ता.

त्या ज्ञानदीपाचि आनि ताक्का अगत्य आश्शिल्या प्रकाशमय सत्त्वगुणाचि तशीचि त्या गुणाचे परिणाम जाव्नु आश्शिल्या सहिष्णुता, शांति, संतोषु, सौमनस्य, प्रेम इत्यादि सद्गुणांचि प्राप्ति कोर्नु घेंव्चे विषयांतुं हो दीपावलिचो संदर्भु सर्वांकयि प्रवृत्त कोरो म्हुणु ह्या मंगलमय प्रसंगांतुं दयाघन परमात्मागेल्या चरणांतुं प्रार्थना.

ॐ तत्सत्

दीपावळि अस्लि परब आचरण कर्तना बाह्य शुद्धि आनि प्रकाशाचे सांगातिचि आमगेल्या अंतःकरणांतुं 'सत्त्वं निर्मलत्वात्प्रकाशकम्' म्हुणु श्रीकृष्णपरमात्माने सांगिले प्रकार निर्मल आनि प्रकाशक जाव्नु आशिल्या सत्त्वगुणाचो उत्कर्षु कोर्नु तें निर्मल, तशीचि ज्ञानाच्या व सहानुभूति, सौमनस्य, प्रेम इत्यादि सद्भावांच्या प्रकाशाने प्रकाशित कोरुक प्रयत्न कोर्काति.

अंतःकरण निर्मल जाल्यारि प्रथमतः तांतुं आशिले ईर्ष्या, द्वेषु वगैरे दूर कोर्काति. हे दोष दूर कोर्नु चित्ताचें प्रसादन (निर्मलता) आस्स कोरुक पतञ्जलिने तागेल्या योगसूत्रांतुं अनेक उपाय सांगूल्याति तांतुलें एक सूत्र ह्या प्रसंगांतुं उद्घृत कोर्येद—

मैत्रीकरूणामुदितोपेक्षाणां सुखदुःखपुण्यापुण्य-
विषयाणां भावनातश्चित्तप्रसादनम् ॥

दुस्र्यांगेलें सुख पळैल्यारि तांगेले विषयांतुं ईर्ष्या उत्पन्न जांव्चो संभवु आस्स. जाल्यारि तांगेले विषयांतुं मैत्रीची, आत्मीयतेची भावना केल्यारि तांगेले सुखयि आमगेलेचि म्हुणु दिसून ती ईर्ष्या ना जात्ता. दुःखी लोकांगेल्या विषयांतुं करुणेचि भावना अभ्यासु केल्यारि आम्मी कोणाकयि दुःख दीव्नये म्हुणु दिस्ता. आनि तश्शि दुःख दिंव्चाक कारण जाल्लो द्वेषु आमगेल्या अंतःकरणांतुं थाव्नु दूर जात्ता. पुण्यशाली मनुष्यांगेल्या विषयांतुं संतोषाची भावना केल्यारि दुस्र्यांगेल्या गुणांतुंयि दोष पोळौंव्चो स्वभावु अर्थात् असूया नाशु पाव्ता. पापी जनांगेल्या

विषयांतुं उपेक्षेची भावना दवोर्नु घेत्ल्यारि आम्मी तांचे लाग्गिथाव्नु दूर आस्तांति आनि संगदोषांतुं थाव्नु मुक्त जात्तांति.

परमात्मु सर्वांकयि आपूणागेलें अंतःकरण निर्मल कोर्नु तांतुं व्यक्तिगेल्या आनि समाजाच्या सुखशांतिक कारण जाल्लल्या सौमनस्य, प्रेम इत्यादि सद्भावांचो विकासु कोर्नु घेश्शि प्रेरणा कोरो म्हुणु ह्या मंगलमय संदर्भांतुं त्या दयाघनागेल्या चरणांतुं आमगेलि प्रार्थना.

ॐ तत्सत्

समाजांतुं ताज्या सुस्थितिक कारण जाव्नु आश्शिलें सौमनस्य, सामरस्य वगैरे स्थिर जाव्नु आस्का जाल्यारि व्यक्तिनिं सत्य, अहिंसा इत्यादि नीतिधर्म यथावत् पालन कोर्चे अवश्य आस्स. मनुष्याक स्वार्थमूलक स्वभावतः आश्शिले राग, द्वेषु इत्यादि विकार ताक्का नीतिधर्मांतुं थाव्नु च्युत कर्तांति. त्या विकारांचेरि जयु पांव्का जाल्यारि ताक्का खंचेयि उच्च ध्येय आस्का जात्ता. देशसेवा, समाजसेवा वगैरे ध्येय योग्य जाव्नु आशिल्तरी पूर्वोक्तस्वार्थमूलक विकार सर्वांशतः दमन कोर्चे सामर्थ्य त्या ध्येयांतुं आश्शिल्वारि दिसना. माकृशि देशाच्या स्वातंत्र्य संग्रामांतुं अत्यंत स्वार्थत्यागपूर्वक आदर्श सेवा केल्लेले कित्लेकि नेता आजि स्वातंत्र्य प्राप्तिनंतर स्वार्थपरायण जाव्नु अधिकारलालसेने असत्य, वंचन इत्यादिरूप व्यवहारांतु निरत जाल्लले दिस्तांति. अतः ह्या लौकिक ध्येयांपेक्षां श्रेष्ठ ध्येयाचि आवश्यकता आस्स. देवु अथवा आत्मु सर्व ध्येयांतुं श्रेष्ठ ध्येय म्हुणु शास्त्र सांग्ताः—

एवं बुद्धेः परं बुद्ध्वा संस्तभ्यात्मानमात्मना ।
जहि शत्रुं महाबाहो कामरूपं दुरासदम् ॥ (गीता ३, ४३)

(बुद्धिपाशि पर जाव्नु आश्शिल्या आत्माक समजूनु ताक्का मनांतुं घट्टि धोर्नु-तागेल्या आश्रयाने-ह्या हात्तांतुं मेळनात्तिल्या कामरूप शत्रुक नाश करि.)

एकान्तभक्तिर्गोविन्दे यत्सर्वत्र तदीक्षणम् । (भागवत)

(परमात्मागेल्या विषयांतुं अनन्य भवित आनि त्या परमात्माक सर्व वस्तुमात्रांतुं आनि प्राणिमात्रांतुं पोळोंव्चें होचि मनुष्यागेलो श्रेष्ठ पुरुषार्थु.)

अतः आमगेलें राष्ट्र कालमान परिस्थितिक अनुसरुनु धर्मातीत जाल्ल्तरी आम्मि धर्मातीत जाव्नये. किंतु परमात्मागेलि भक्ति आनि तागेल्या आराधनारूप स्वधर्मानुष्टानाच्या आश्रयांतुंचि नीतिधर्म आनि समाजसेवा वगैरे लौकिक कर्तव्यं कोर्कांति. मात्र न्हयि, हे नीतिधर्म आनि लौकिक कर्तव्यंयि या विश्वात्मक परमात्मागेलिचि सेवा ह्या भावनेने कोर्कांति. तावळी तांतुंथाव्नु च्युत जांव्चो संभवु आस्सना.

असूल्या आध्यात्मिकतेच्या आनि नीतिधिर्माच्या समन्वित अनुष्ठानाविषयांतुं परमात्मु सर्वांकयि प्रेरा कोरो आनि तन्मूलाक व्यक्तिगेलें कल्याण तशीचि समाजाचें अभ्युदय हीं दोन्नियि साध्य जावोति म्हुणु ह्या मंगलमय संदर्भांतु त्या दयाघन प्रभुगेल्या चरणांतुं आमगेलि प्रार्थना.

ॐ तत्सत्

दीपावलि आपणागेल्या नांवाप्रकार दिव्यांचि–प्रकाशाचि–परब जाव्नु आस्स. आम्मि सूर्य, चंद्र, अग्नि इत्यादिंगेल्या भौतिक, दिव्य प्रकाशानेचि तृप्त जाव्नये. हांकांयि प्रकाशु दित्लो 'तमेव भान्तमनुभाति सर्वम्' 'ज्योतिषामापितज्ज्योतिः' इत्यादि श्रुति-स्मृतिंतुं सांगिल्लो एकु परमात्मु आस्स. तागेलो प्रकाशु–ज्ञान-संपादन कोर्का. तावळि 'ज्ञानं लब्ध्वा परां शान्तिमचिरेणाधिगच्छति' म्हुणु श्रीकृष्णपरमात्माने सांगिलेप्रकार सर्वांनि इच्छा कोर्चि नित्यसुखात्मक श्रेष्ठ शांति वग्गिचि प्राप्त जात्ता.

तो प्रकाश–चैतन्य-रुप परमात्मु आमचांतुं थाव्नु विंगड न्हयि. आम्गेलो सर्वांगेलो आत्मुचि जाव्नु आस्स. जाल्यारि मायेने-अविद्येने–आवृत्त जाव्नु आश्शिल्मितिं तागेलें ज्ञान-प्रकाशन-जाय्ना. 'दृश्यते त्वग्र्यया बुध्द्या सूक्ष्मया सूक्ष्मदर्शिभिः' ह्या उपनिषद्वचनाप्रकार आपणागेल्या तीक्ष्ण बुद्धिशक्तिने सूक्ष्म-गहन-तत्त्वंयि समजतल्यांक तांगेल्या सूक्ष्म-शुद्ध-आनि एकाग्र बुद्धिचे योगाने तागेलें दर्शन कोर्नु घेंव्चाक शक्य आस्स.

बुद्धिचि शुद्धता अर्थात् चित्तशुद्धि प्राप्त कोर्नु घेतल्यारि त्या चित्ताचि एकाग्रता अनायासाने साध्य जात्ता. ही चित्तशुद्धि 'ब्रह्मण्याधाय कर्माणि सङ्गं त्यक्त्वा करोति यः। लिप्यते न स पापेन पद्मपत्रमिवाम्भसा ॥' ह्या गीतोक्तिप्रमाणे फलेच्छारहित आनि ईश्वरार्पणबुद्धिने केल्ल्या कर्मांनि –

स्वधर्मानि–प्राप्त जात्ता हाज्जेनंतर त्या शुद्ध एकाग्र चित्ताने अखंडचैतन्यरूप परमात्मागेलें ध्यान केल्यारि तागेलें दर्शन जात्ता.

चित्तशुद्धिद्वारा क्रमेण परमात्मदर्शनमूलक कृतार्थतेक कारण जाल्ल्या ह्या स्वधर्माच्या-निष्काम आनि ईश्वरार्पित कर्मयोगाच्या-आचरणाविषयांतुं भक्तवत्सल परमात्मु सर्वांक तत्परता अनुग्रह कोरो म्हुणु ह्या दीपावलिच्या मंगलमय समयारि तागेल्या चरणकमलांतुं आमगेलि प्रार्थना.

ॐ तत्सत्

दीपावलि संदेश १९६३

दीपावलि श्रीकृष्णपरमात्माने नरकासुराक संहारु कोर्नु जगाक कल्याण केल्लल्याचे स्मरणार्थ मंगलोत्सवु जाव्नु आस्स. रजस्तमोगुणांचेरि सत्त्वगुणाचो, आसुरी संपत्तिरि दैवी संपत्तिचो विजयु ह्या संदर्भारी व्यक्त जात्ता. दैवी संपत्ति मोक्षाक (नित्यसुखाक) कारण जात्ता, आसुरी संपत्ति दुःखरूप संसारबंधाक कारण जात्ता. दैवी संपत्ति समाजांतु संघटन, सौमनस्य, भ्रातृभावु, प्रेम वगैरे आस्सकोर्नु ताज्या उन्नतिक कारण जात्ता. आसुरी संपत्ति समाजाच्या विघटनाक आनि तन्मूलक अवनतिक कारण जात्ता. इंद्रियनिग्रहु, आर्जव (मनांतुं, वाचेंतुं आनि कृतिंतु एकरूपता), अहिंसा, सत्य, शांति, भूतदया, मृदुस्वभावु, अद्रोहु (दुस्यांक पाड इच्छा कर्नात्तिलें आस्चें) इत्यादि गुण दैवी संपत्तिंतुं यात्ताति. दर्पु, क्रोधु, निष्ठुर वचन, असत्य, नास्तिक्य, क्रूरत्व, कामभोगपरायणत्व, अन्यायाने धनार्जन, अहंकारु, वगैरे दोष आसुरी संपत्तिचे जाव्नु आस्सति. ह्या दोन्निचोयि संघर्षु आम्गेल्या हृदयांतु सदा चालु आस्ता. दीपावलिच्या समयारि आम्मि आत्मनिरीक्षण कोर्नु आमगेल्या हृदयांतु आश्शिलो आसुरसंपत्तिरूप अंधकारु दूर कोर्नु तें दैवी संपत्तिने प्रकाशित कोर्चो संकल्पु कोर्नुं त्या संकल्पाच्या पूर्तिखातिर यथासाध्य प्रयत्नं आनि साधन कर्तऽआसल्यारि हो प्रकाशाचो उत्सवु केल्ललो सार्थक जात्ता.

सर्वांगेल्या हृदयांतुं आसुरी संपत्तिचें निर्मूलन जाव्नु दैवी गुणांचो उदयु जावो आनि तन्मूलक व्यक्ति पशीचि समाजाचें कल्याण जावो म्हुणु त्या दयाघन परमात्मागेल्या चरणांतुं ह्या शुभप्रसंगारि आमगेलि प्रार्थना.

ॐ तत्सत्

दीपावलि संदेश १९६४

दीपावलिपर्व संनिहित जाल्यां. ह्या वेळारि लोक आपूणागेल्या निवासस्थानांतुं आश्शिलें मालिन्य दूर कोर्नु थंयि स्वच्छता संपादन कर्तांति. थंयि आश्शिलो अंधकारु दूर कोरुक तैल दीपानिं आनि विविधवर्ण रंजित विद्युद्दीपानिं तें प्रकाशित कोर्नुं त्या प्रकाशाचे दर्शनाने आनंद पाव्तांति. अंतःकरणांतुं आश्शिले अंधकारु–अज्ञानाचे परिणाम जाव्नु आश्शिले द्वेषु, क्रोधु, मत्सरु वगैरे विकार-दूर कोर्नु तें प्रकाशरूप सत्त्वगुणाच्या परिणामानिं परस्पर प्रेम, सौहार्द, सहानुभूति, दया, क्षमा, इत्यादि सद्भावानिं–प्रकाशित कर्तांति. ह्या सद्भावांचे द्योतक जाव्नु इष्ट-मित्रांगेलो समागमु, तांचे सांगाति मिष्टान्न भोजन प्रभृतिंचो आनंदानुभवुयि घेत्तांति. वट्टायेरि ही परब मुख्यतः प्रकाशाची आनि आनंदाची जाव्नु आस्स.

ह्या भौतिक प्रकाशांतुं आनि लौकिक आनंदांतुंचि ही परब समाप्त जात्ता म्हुणु लेक्कु नये. किंतु ह्या भौतिक प्रकाशाकयि प्रकाशक जाव्नु आश्शिल्या आनि ह्या लौकिक आनंदाकयि मूल जाव्नु आश्शिल्या सच्चिदानंद रूप परमात्मादिक्काक आम्कां प्रवृत्ति आस्स जांव्का. 'ज्योतिषामपि तज्ज्योतिः' (इतर प्रकाशांकयि तें परतत्त्व प्रकाशक जाव्नु आस्स) अश्शि गीता सांग्ता. 'एतस्यैवानन्दस्यान्यानि भूतानि मात्रामुपजीवन्ति' (ह्याचि ब्रह्मानंदाच्या लेशाचो अनुभव बाकीचे प्राणिमात्र घेत्तांति) ह्या प्रकार उपनिषद सांग्ता. ह्या परमात्मागेल्या ज्ञानानेचि–प्राप्तिनेचि–मनुष्यु-कृतकृत्य जात्ता. ही दीपावलि सर्वांक

तदभिमुख कोरो म्हुणु त्या दयासिंधु परमेश्वरागेल्या चरणांतुं ह्या मंगलमय प्रसंगारि आमगेलि प्रार्थना.

ॐ तत्सत्

Deepavali Message 1965

Blessings, From His Holiness Shrimat Anandashram Swamiji

The Deepavali symbolizes the victory of the forces of light over those of darkness. It is well-known that light stands for the divine attributes (Daivi Sampatti) and darkness for the Asuri characteristics. The struggle between these two is constantly going on, primarily in our own hearts, but is also manifested in the outer world, as we are witnessing today. At such an anxious time, our prayer is that we may keep God and Dharma in incessant remembrance and that peace and goodwill may be restored without delay.

Sarve cha sukhinah santu
Sarve santu niramayah
Sarve bhadrani pashyantu
Ma kaschid duhkhabhag bhavet.

Om Tat Sat

OUR AVAILABLE CHITRAPUR MATH PUBLICATIONS

		Rs.
1.	Atha Devatarchanavidhi (Sanskrit) 1896 – Reprinted in 1999	25.00
2.	Shri Chitrapur Guruparampara Charitra (Marathi) by Smt. Umabai Aroor, Reprinted in 1995.	200.00
3.	Pandava Gita (English) by V. Rajagopal Bhat (An anthology of prayers from Mahabharat & Puranas)	10.00
4.	Sadguru Bodhamrit (English) by V. Rajagopal Bhat. (Gleanings of Upadeshas from our Revered Sadgurus)	10.00
5.	Pancharatna Haripaath (Marathi & English) by V. Rajagopal Bhat (A treatise on Bhakti with collection of choice devotional songs from the five gems of Maharashtra i.e. Nivriti, Jnanadev, Ekanath, Namdev and Tukaram).	10.00
6.	Saarth Shri Shankaranarayan Geetam (Konkani & Kannada) by Gulvady Bhavanishanker Shastri.	5.00
7.	Saarth Shivanand Lahari (Sanskrit, Konkani)	5.00
8.	Guru Geetamrta. (Gleanings from Guru Geeta).	25.00
9.	Anandabodhamrita (Konkani)	25.00
10.	Manache Shloka (Marathi, Kannada & English) by H. Shankar Rao, Reprint 2000.	20.00
11.	Parijnana Bodhamrita (30 discourses on Shrimad Bhagvata by P.P. Parijnanashram Swamiji)	40.00
12.	Saartha Mantrapushpanjali	10.00
13.	Shri Chitrapur Nityapath (Sanskrit) (Revised)	20.00
14.	Tamaso Maa Jyotirgamaya	10.00

PUBLICATIONS FROM SHRI ANANDASHRAM KHAR, MUMBAI

Shree Chitrapur Guruparampara (English) by Amembal Sunder Rao.	25.00
Chitrapur Saraswat Temples & Shrines by Ugran Sunder Rao.	40.00

चक्षुर्नो धेहि चक्षुषे चक्षुर्विख्यै तनूभ्यः
सञ्चेदं वि चपश्येम
ॐ
॥श्री चित्रापुर मठः श्रीवल्ली॥